प्रवाह





विकसित देशों के उपग्रहों को अंतरिक्ष में स्थापित करने और नासा की तुलना में बेहद कम खर्च में परियोजनाएं पूरी करने के बाद हमारे देश ने अब अंतरिक्ष में उपग्रहों को मार गिराने की क्षमता भी हासिल कर ली है, जो एक विराट उपलब्धि है।

अंतरिक्ष में चौथी ताकत

की सुबह एंटी सैटेलाइट मिसाइल का सफल परीक्षण कर भारत अमेरिका, रूस और चीन के बाद अंतरिक्ष में मार करने की क्षमता हासिल करने वाला चौथा देश बन गया है, जिसके लिए हमारे वैज्ञानिक बधाई के हकदार हैं। इस

उपलब्धि की जानकारी खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने देश को दी है। मिशन शक्ति योजना के तहत डीआरडीओ के वैज्ञानिकों ने स्वदेशी तकनीक से तैयार मिसाइल से पृथ्वी की निचली कक्षा में तीन सौ किलोमीटर दूर हमारे एक ऐसे उपग्रह को मार गिराया, जिसे सेवा से हटा लिया गया था। 21 नवंबर, 1963 को केरल में तिरुवनंतपुरम के पास थुंबा से पहला रॉकेट लांच करने के साथ शुरू हुआ भारत का अंतरिक्ष कार्यक्रम चंद्रयान, मंगलयान मिशन

की सफल लांचिंग और गगनयान मिशन की मंजूरी के बाद अब अंतरिक्ष विज्ञान में हमारी प्रगति का एक और मील पत्थर है। वैसे भी विकसित देशों के उपग्रहों को अंतरिक्ष में प्रक्षेपित कर, एक साथ सौ उपग्रह अंतरिक्ष में भेजकर और नासा की तुलना में बेहद मामली खर्च में महत्वाकांक्षी अभियान परे कर हमारे अंतरिक्ष विज्ञान ने नित नई उंचाइयां छुई हैं। अमेरिका ने 1958 में और पूर्व सोवियत संघ ने 1964 में ही अंतरिक्ष में उपग्रहों को निशाना बनाने की ताकत हासिल कर ली थी। चीन द्वारा 2007 में यह परीक्षण करने के बाद भारत पर भी इसके परीक्षण का दबाव बन गया था, और हमारे वैज्ञानिकों ने करीब एक दशक पहले यह क्षमता हासिल भी कर ली थी। पर तब इसका परीक्षण नहीं हो पाया था, जिसकी वजह राजनीतिक इच्छाशक्ति के अभाव के

अलावा अंतरिक्ष में कचरा फैलने की आशंका भी बताई जाती थी। इस परीक्षण से अंतरिक्ष में हमारी ताकत बढी है, जिससे कोई संदिग्ध सैटेलाइट हमारी अंतरिक्ष सीमा में प्रवेश नहीं कर पाएगा। चुंकि जासुसी उपग्रह पृथ्वी की निचली कक्षा में होते हैं, ऐसे में अब भारत की जासूसी करना मुश्किल होगा और अंतरिक्ष में हमारे संसाधनों की रक्षा सुनिश्चित हो सकेगी। बेशक अंतरिक्ष में शत्रु देश के उपग्रह को मार गिराने का कोई उदाहरण नहीं है, पर परंपरागत युद्ध और साइबर युद्ध के बाद अगला पड़ाव अंतरिक्ष में वर्चस्व की लड़ाई को ही बताया जा रहा है। हालांकि हमारी सरकार ने स्पष्ट कर दिया है कि इस परीक्षण के जरिये बाहरी अंतरिक्ष में हथियारों की होड़ का भारत का कोई इरादा नहीं है, और यह हमारी तकनीकी और आर्थिक प्रगति का ही सूचक है।

गरीबी हटाओ बनाम राष्ट्रवाद



हुल आए। मुस्कराए। राहुल ने न्यूनतम आय योजना की घोषणा की, फिर पत्रकारों से कुछ इस तरह कहने लगे : आप 'चौंक' गए न! 'न्यूनतम आय योजना' एक

'धमाका' है। ऐसी योजना दुनिया में कहीं नहीं है। हम पांच करोड़ सर्वाधिक गरीब परिवारों को 6,000 रुपये महीने देंगे। और इस तरह हम बची-खुची गरीबी को पूरी तरह खत्म कर देंगे। ्रिक टीवी चैनल ने इस योजना के राजनीतिक

आशय को तत्काल ताडा और पूछा कि क्या यह घोषणा भाजपा के 'राष्ट्रवाद' के नैरेटिव की जगह ले सकती है। यानी क्या राहुल का यह 'धमाका' राष्ट्रवाद और विकास के मुद्दों को बेकार कर सकता है? शायद इसी आशंका से विचलित होकर वित्त मंत्री जेटली ने इस घोषणा को धोखा कहकर इसकी हवा निकालने की कोशिश की और कांग्रेस के 'गरीबी हटाने वाली पार्टी' की छवि पर हमला बोला कि कांग्रेस ने गरीबी हटाने के नाम पर गरीबी का वितरण ही किया है।

लेकिन ऐसी 'घोषणाओं' को आज की जनता किस तरह से लेती है? इस सवाल पर किसी ने विचार नहीं किया। अगर किया होता, तो मालूम पड़ता कि आज की जनता इस तरह की घोषणाओं को 'चुनावी तिकडम' मानती है। वह जानती है कि यह सब वोट लेने की चाल है। यानी कि आज की जनता सत्तर के दशक की जनता नहीं है, जो दानदाता का एहसान माना करती थी। अब वह ऐसे किसी एलान को 'चुनावी रिश्वत' मानती है।

चुनाव घोषित होने से कुछ पहले मोदी ने 'किसान सम्मान निधि' योजना के तहत गरीब किसानों को छह हजार रुपये प्रतिवर्ष देने की घोषणा की थी, तब उसे भी वोट लेने के लिए बांटी जाने वाली 'खैरात' की तरह देखा गया था। हमारे



आने वाले दिनों में चुनावी मुद्दा राहुल की 'न्यूनतम आय योजना' बनती है या उस पर 'राष्ट्रवाद का नारा' हावी रहता है, यह देखना दिलचस्प होगा!

सुधीरा पचौरी, वरिष्ठ साहित्यकार

दल अपने-अपने विचारों के किलों में बंद रहते हैं। वे अब भी अपने को 'दाता' समझते हैं। वे जनता को उसी तरह से भूखी-नंगी समझते हैं, जिसको कुछ दे देंगे, तो वह खुश हो जाएगी, जबकि आज की गरीब जनता में स्वाभिमान और अकड़ का एक नया मूल्य घर कर गया है कि अब वह आपकी उतरन नहीं पहनना चाहती और न आपकी जूठन खाना चाहती है। मोबाइल और सोशल मीडिया से सज्जित, इस अति बतकूटी दुनिया में इस जनता

का नारा है : *साडा हक इथ्थै रख!*

हमारी 'गरीब जनता' भी अब 'बेचारी' नहीं रह गई है। आज 'हमदर्दी' शब्दकोश से बाहर का शब्द है। आम जनता यानी गरीब जनता का व्यवहार बहुत तेजी से बदला है। और उधर, मीडिया ने दलीय राजनीति और चुनाव को इतना पारदर्शी बना दिया है कि जनता की शक्की निगाह से किसी का छल-कपट छिपता नहीं है। वह मानती है कि हर दल छल-कपट करता है और इसलिए सबसे

अधिक छलिया ही उसे पसंद है, यानी कि जो उसे अच्छी तरह छले. लेकिन कष्ट महसस न होने दे। यानी जोर का झटका, लेकिन धीरे से लगे! मोदी के झटके भी ऐसे ही रहे हैं।

मुद्दा यह नहीं है कि राहुल की 'न्यूनतम आय योजना' के लिए पैसा कहां से आएगा? इसका जवाब यही है कि वह वहीं से आएगा, जहां से मौजूदा सरकार के पास आ रहा है। जब भाजपा सरकार अपनी कल्याणकारी योजनाओं के लिए भारत के खजाने से खर्च कर सकती है, तो कांग्रेस भी कर ही सकती है। लेकिन, ऐसा तभी संभव होगा, जब राहुल की सरकार बने या ऐसी सरकार बने, जिसमें राहुल का पूरा दखल हो और यह तब होगा. जब इस योजना की सचना उस वोटर तक पहुंच जाए, जो इस 'न्यूनतम आय योजना' में आने वाला 'अति गरीब और वंचित' है। अगर ऐसा हो सका, तो यह योजना राहल को गदुदी पर बिठा देगी। कांग्रेस की यही सबसे बड़ी 'पहेली' है : सत्ता तब मिलेगी, जब सबसे गरीब के वोट मिलें और वोट तब मिलेंगे, जब सत्ता मिले और ये योजना लागू हो। यानी न बाबा आवै न घंटा बाजै!

अब रह जाता है यह सवाल कि बालाकोट के बाद समारोहित भाजपा के राष्ट्रवादी हल्ले को क्या 'न्यूनतम आय योजना' किनारे कर पाएगी? यहां हमें संघ और भाजपा के 'राष्ट्रवाद' का उपहास उड़ाने की जगह उसे कुछ गंभीरता से लेना चाहिए, क्योंकि यह एक दिन अचानक 'घोषित' की गई योजना नहीं है, बल्कि संघ की पुरानी और स्थायी 'योजना' है और पिछले पांच साल से सत्ता से लेकर हिंदू संगठनों द्वारा नाना प्रकार से इसे चलाया गया है। भाजपा का 'राष्ट्रवाद' और 'विकास' का विमर्श इस तर्क से आगे बढ़ता है कि राष्ट्र पर खतरा है। उसे सुरक्षा चाहिए। उसके लिए एक 'मजबूर' सरकार की जगह एक 'मजबूत' सरकार चाहिए। मजबूत सरकार को मजबूत नेता चाहिए

और ऐसा दल भाजपा और ऐसे नेता मोदी ही हो सकते हैं। अगर मजबूत नेता होगा, तो मजबूत सरकार होगी, और फिर फैसले जल्दी होंगे। वे अनिर्णय के विंध्याचलों में नहीं खोएंगे और इस तरह विकास भी तेजी से होगा। राष्ट्र पड़ोसियों से असुरक्षित है। उसे सुरक्षा चाहिए। वह सुरक्षा मोदी ही दें सकते हैं।

पांच साल से चला आता यह विमर्श कोई एक दिन का विमर्श नहीं है। इस तरह मजबत नेता. मजबूत राष्ट्र, मजबूत राष्ट्रवाद कोई मामूली विमर्श नहीं है। वे जाति, लिंग और धर्म के पार जाकर काटते हैं। इसके मुकाबले 'न्यूनतम आय योजना' सिर्फ पांच करोड़ परिवारों के लिए वादे की तरह

हमारे लेखे 'गरीब' की याद भी राहुल को कुछ देर से आई और अगर आई भी, तो 'राजनीतिक निवेश' की तरह आई। प्रश्न रह जाता है कि क्या इस योजना से 2019 के चुनावों के लिए भाजपा का खोजा गया 'मजबूत राष्ट्रवाद' का नारा फीका पड़ पाएगा? यानी क्या 'न्यूनतम आय योजना' का राहुल का कार्ड राष्ट्रवाद जैसे 'भावनात्मक' मुद्दे को उखाड़ पाएगा! यानी क्या 'नकद नारायण' मिलने की 'उम्मीद' राष्ट्रवादी और अंध राष्ट्रवादी जज्बातों को कमजोर कर सकेगी? शायद नहीं।

माना कि 'रोटी-रोजी' महत्वपूर्ण है, लेकिन 'जज्बात' की खातिर आम आदमी बहुत से कष्ट तक सह लेता है। इस देश का आम आदमी 'संकट निवारण' के लिए पांच-सात दिन का व्रत तो यों ही करता रहता है। ध्यान रहे, एक कमजोर आदमी को ताकतवर राष्ट्र अधिक काम्य होता है, क्योंकि उसे लगता है कि ताकतवर राष्ट्र ही उसे ताकत दे सकता है। आगे आने वाले दिनों में चुनावी मुद्दा राहुल की 'न्यूनतम आय योजना' बनती है या उस पर 'राष्ट्रवाद का नारा' हावी रहता है, यह देखना दिलचस्प होगा!



अंतर्ध्वनि

पानी ही इंद्रधनुष रचता है अपनी

बूंद-बूंद में

एक साल सावन तक पानी नहीं बरसा। खेतों में दरारें पड़ गईं। नदी-नाले सूखकर कांटा हो गए। अवर्षण का पहला प्रकोप ढोर-डांगर झेलते हैं, सो बड़ी तादाद में वे मरने लगे। मनुष्य के प्यासे रहने की नौबत आ गई। अखंड कीर्तन, यज्ञ-हवन के साथ-साथ 'मेंढक-मेंढक पानी दे' गाती लड़कियों ने मरे मेंढक का जुलूस निकाला। लेकिन पानी नही बरसा। इंद्र देवता नहीं पसीजे। दादी ने तब अपनी स्मृति में से कुछ कहानियां टटोलीं। बोलीं, 'पानी को किसी व्यापारी ने धरती मे



गाड़ दिया है। पानी गाड़ दिया जाए, तो फिर अवर्षा अकाल पड़ता है। चीजें महंगी हो जाती हैं। इसका व्यापारी मिलता है।' आज दादी की

बातों के नए-नए अर्थ खुलने लगे हैं। लगता है, दादी ठीक ही कहती थीं। पानी को गाडा जाएगा, तो वह सड़ेगा। पानी को तौला तो पानी की हैसियत छोटी हो जाएगी। पानी बांधा जाएगा, तो फिर वह पानी नहीं रहेगा। पानी तो धरती में से उमगता है। वह धरती के ऊपर आने के लिए उछाल लगाता है। धरती की परती को थोड़ा हटाया और पानी का हुल्ला फूटा। धरती की शस्य-श्यामलता का आंधार है उसका पानी। पानी गतिशील रहे, तो पानी है। पानी को धरती सोखती है, तब भी वह गतिशील रहता है। धरती की नस-नस में पानी का प्रवाह बनता है। धरती की धमनियों में पानी रक्त बनकर गतिशील होता है। जल-संग्रहण हो, किंतु वह सड़ न पाए। वह धमनी के भीतर थक्का न बन जाए। इसलिए पानी को मुक्त करो, उसे बांधो मत। जैसे मुद्रा अपने प्रवाह में सार्थक होती है, वैसे पानी अपनी चक्र-लीला में ही धरती पर कविता रचता है-वाष्प बनकर, बादल बनकर, बूंद बनकर, नदी-नालों की हंसी बनकर, कुओं-तालाबों की हिलोर बनकर, स्प्रिंकलर की फुहार बनकर। यह पानी ही इंद्रधनुष रचता है अपनी बूंद-बूंद में।

-वरिष्ठ हिंदी साहित्यकार



कुड़े के ढेर को हरे-भरे ू उद्यान में बदल दिया

मैं एक वकील हूं और कोलकाता में रहता हूं। मेरे पिता कोलकाता में वनस्पतियों की संघनता से कभी बहुत प्रभावित थे। लेकिन आज वह बात नहीं है। पेड-पौधों के घटते जाने से कोलकाता में भी प्रदुषण बढ़ रहा है। चूंकि मैं गांव में पला-बढ़ा हूं, इसलिए कोलकाता में पर्यावरण की बदहाली पर मुझे दुख होता है। मैं जहां काम करता हूं, वहां जाने के लिए मुझे माझेरहाट और न्यू अलीपुर स्टेशन से होकर गुजरना पड़ता है। इन दोनों स्टेशनों के बीच लंगभग एक किलोमीटर तक फैली जगह को लोगों ने कूड़ा डालने की जगह में बदल दिया था। वहां से गुजरते हुए इतनी बदबू आती थी कि नाक में रूमाल बांधकर गुजरना पड़ता था। करीब दस साल पहले की बात है। छुट्टी के एक दिन में कौतूहलवश अपनी गाड़ी लेकर वहां तक चला गया। मैंने देखा कि वह परा इलाका जैसे नर्क बना पड़ा है। कूड़े के विशाल ढेर से थोड़ी दूरी पर लोगों के घर थे। मैंने उनमें से कुछ लोगों से पूछा, तो मालूम हुआ कि स्थानीय प्रशासन से शिकायत करने के

मेरे इस काम से लोगों को पौधरोपण के जरिये पर्यावरण को हरा-भरा रखने की प्रेरणा भी मिली है।

बावजुद वर्षों से इसका समाधान नहीं निकला। यह भी पता चला कि रात में लोग यहां आकर कुडा डाल जाते हैं। मैंने सोचा कि इस पूरे बंजर इलाके में अगर

पेड़-पौधे लगा दिए जाएं, तो शायद समस्या का समाधान हो। मालूम हुआ कि यह जमीन कोलकाता पोर्ट ट्रस्ट की है। मैंने उनको अपनी योजना के बारे में एक आवेदन लिखकर दिया, लेकिन उसका कोई जवाब नहीं आया। फिर मैंने आसपास के लोगों से इजाजत लेकर यहां गोरिल्ला गार्डनिंग शुरू कर दी। गोरिल्ला गार्डनिंग का मतलब है ऐसी जगह पर पौधे उपजाना, जिसका मालिक कोई और हो। मैं सुबह आता और यहां पौधे लगाकर चला जाता। आसपास रहने वाले लोग बेहद गरीब थे, लेकिन उन्होंने पौधों को पानी देने और उनकी रखवाली करने का मुझसे वादा किया। हालांकि इस बीच कुछ लोगो ने

इस काम में बाधा डालने की कोशिश की। वे रात में आते और पौधे उखाड़ देते। चूंकि मैं वहां रहता नहीं था, इसलिए कुछ कर नहीं सकता था। लेकिन आसपास के युवाओं और महिलाओं ने उस पूरे इलाके की रखवाली शुरू की। उपद्रवियों को जब मेरे बारे में पता चला कि मैं वकील हूं, तो उन्होंने इस काम में बाधा डालने से दूरी बना ली। हालांकि तब भी कई बार सुबह मुझे वहां दारू की खाली बोतल और बीड़ी के टुकड़े मिलते। उन्हें इस तरह फेंका जाता, जिससे पौधों को नुकसान पहुंचे। लेकिन कुछ समय बाद मुझे सुखद आश्चर्य हुआ, जब मैंने स्थानीय लोगों और संस्थाओं को भी मेरी इस पहल के प्रति दिलचस्पी लेते पाया। चूंकि मेरी इस योजना में मेरे कुछ दोस्तों का भी साथ था, और कोलकाता की कुछ संस्थाएं मुझे बीज और पौधे दे रही थीं, इसलिए भी इसका बाहर प्रचार हुआ। करीब दस साल में यह पूरा इलाका वनस्पतियों से आच्छादित हो गया। मैं अब यहां आता हूं, तो मुझे गांव में बिताए बचपन के दिन याद आते हैं, जब हम पेड़ों पर चढ़कर झूला झूलते थे, आम और अमरूद तोड़कर खाते थे और गर्मियों में पेड़ की छाया में आराम करते थे। यहां अब करीब पच्चीस हजार पेड हैं। स्थानीय लोग अब मेरा सम्मान ही नहीं करते, बिल्क मेरे इस काम से उन्हें पौधरोपण के जरिये पर्यावरण को हरा-भरा रखने की प्रेरणा भी मिली है। हालांकि अब नई समस्या यह खड़ी हुई है कि कुछ पेड़ की लकड़ियां रात में काटी जाने लगी हैं। पर स्थानीय युवकों की पहरेदारी से इस पर भी अंकुश लगेगा।

-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित।

रणनीतिक बदलाव का संकेत

लिखा है कि दोषी राष्ट्रों की संप्रभुताओं का उल्लंघन संभव है,

यदि उन्होंने अपनी संप्रभुता का उपयोग हमारी संप्रभुता के विरुद्ध किया हो। शायद यह पहली बार है कि भारत ने अपने शत्रओं को उनकी मांद में ही ध्वस्त करने की कार्रवाई की है। यदि यह हमारी सैन्य संस्कृति में परिवर्तन का प्रारंभ है, तो यह नई रणनीति भारत-अफगानिस्तान में मजहबी आतंक की धरी को नेस्तनाबद करने की क्षमता रखती है। क्योंकि अब आतंक का आधार तंत्र असुरक्षित हो गया है। आप

चाहें तो इसे 'मोदी डॉक्टिन' भी कह सकते हैं। हमने देखा है कि पाकिस्तान ने वर्ष 1989 से कश्मीर में नियमित आतंकी भेजने का काम बड़ी तेजी से प्रारंभ कर रखा है। इस कार्य के लिए एक पूरा प्रशासनिक तंत्र संचालित है। जैश-ए मोहम्मद, लश्कर-ए तैयबा इसके हरावल दस्ते हैं। अमेरिकी पाक समर्थित सफल जेहादी तालिबानी अभियान के बाद 1989 में अफगानिस्तान से सोवियत सेनाओं की वापसी हुई थी। अब वे तालिबानी लड़ाके खाली होने वाले थे. क्योंकि अफगानिस्तान फतह हो गया था और करीब ही कश्मीर था. जिसे आजाद कराना शेष था।

युद्ध के दौरान स्थापित हुए तालिबान पाकिस्तान आर्तकी तंत्र का प्रभाव अब भारत को झेलना था। वह 1990 की 19 जनवरी की तारीख थी, जब कश्मीरी पंडितों को घाटी छोड़कर पलायन करने का हुक्मनामा जारी किया गया था। उस समय किसी तरह जोड-तोड़कर सत्ता में आई वी पी सिंह सरकार का दौर था। उस सरकार के आंतरिक विरोधाभास ही इतने बड़े थे कि उनके लिए अपनी सरकार को बचाए रखना ही पाकिस्तान का यह लक्ष्य रहा है कि कश्मीर में आतंकी गतिविधियां इस हद तक बढाई जाएं कि भारत वार्ता की भेज पर बैठने को बाध्य हो जाए। पर भारत ने नई रणनीति के सहारे पुलवामा हमले का जवाब देकर अपनी शक्ति और नेतृत्व क्षमता दिखाई है।



आर विक्रम सिंह पूर्व सैनिक एवं

बहुत बड़ी चुनौती था। वह इस पाकिस्तान-अफगानिस्तान-अमेरिकी गठजोड का क्या करती. क्योंकि वह इसे समझ ही नहीं सकी। नकारात्मक राजनीति के प्रोधा वी पी सिंह ने सोचा कि मुफ्ती सईद को गृह मंत्री बनाकर उन्होंने कोई मास्टरस्ट्रोक खेला है। वही उनके गले की फांस बन गया। रूबैया सईद अपहरण के जवाब में आतंकियों को छोड़ने से कश्मीर के आतंकवाद को प्रोत्साहन मिला।

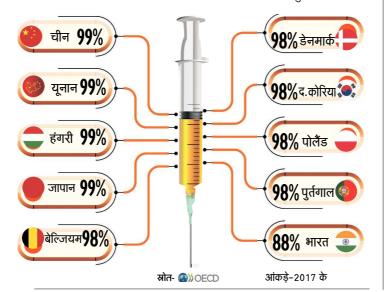
ऑपरेशन बालाकोट इस आतंक की जड़ पर पहला प्रहार है और भारत की बदल रही मानसिकता, आत्मनिर्भर रणनीति का प्रतीक है। इससे पहले दो वर्ष पूर्व सीमापार आतंकी लांचपैडों पर की गई आक्रामक कार्रवाई सीमित उद्देश्यों को लेकर हुई पहली बड़ी कार्रवाई थी। लेकिन बालाकोट एक रणनीतिक बदलाव है। नेतृत्व की परीक्षा चुनौतियों के सामने होती है। नेतृत्व सक्षम है, तभी ऑप बालाकोट कर सकते हैं। 26/11 का मुंबई हमला भी एक बड़ी चुनौती था, जिसमें हम सबूतों के डोजियर भेज कर और यह मानकर संतुष्ट हो गए थे कि इससे दुनिया में पाकिस्तान की बड़ी बदनामी हो रही है। उस दौर में भीरूता का आवरण इतना गहन था कि उसके जवाब में हमारे लिए 'सैन्य प्रतिक्रिया' जैसे शब्द का उच्चारण तक संभव नहीं था।

अब बालाकोट को केंद्र में रखकर एक संपूर्ण डॉक्ट्रिन या रणनीतिक सिद्धांत विकसित किए जाने की आवश्यकता है, जिसका उपयोग शांतिकाल में ऐसे सार्वभौमिक राष्ट्रों के विरुद्ध किया जा सके, जो अपनी सार्वभौमिकता का दुरुपयोग दूसरे राष्ट्र के विरुद्ध परोक्ष युद्ध के लिए करते हैं। यह रणनीति शत्रु को आणविक प्रतिक्रिया करने की गुंजाइश नहीं देती। पाकिस्तान का यह लक्ष्य रहा है कि कश्मीर में आतंकी गतिविधियां इस हद तक बढ़ाई जाएं कि भारत वार्ता की भेज पर बैठने को बाध्य हो जाए। पुलवामा हमला भारत को चुनावों के दौर में किंकर्तव्यविमूढ़ बनाते हुए एक असहाय देश के रूप में प्रदर्शित करने के लिए किया गया था। लेकिन भारत ने नई रणनीति का सहारा लेकर इस संकट को अपनी शक्ति में बदल दिया है।



बच्चों के टीकाकरण की स्थिति

बच्चे किसी भी देश का भविष्य होते हैं, इसलिए उन्हें स्वस्थ बचपन प्रदान करने के लिए उनका टीकाकरण किया जाता है। चीन, यूनान, हंगरी और जापान ऐसे देश हैं, जहां 99 फीसदी बच्चों का डीटीपी टीकांकरण हो चुका है, जबिक भारत के 88 फीसदी बच्चों का डीटीपी टीकाकरण हुआ है।



लालच है तो ईश्वर नहीं

एक राजा की धर्मपरायणता से ईश्वर बहुत खुश हुआ। उसने उसे सपने में दर्शन दिए और वर मांगने को कहा। राजा ने कहा, भगवन, मेरी प्रजा भी धार्मिक है। मैं चाहता हूं कि आप हम सबको अगले रविवार को नदी किनारे वाली पहाड़ी पर दर्शन दें। ईश्वर ने तथास्तु कहा। रिववार की सुबह ही राजा-रानी के साथ प्रजा नहा-धोकर पहाड़ी की तरफ चल पड़ी। रास्ते में चांदी का एक पहाड़ दिखा।



थोड़े लोग राजा के पीछे-पीछे चले। थोड़ी दूरी पर सोने का पहाड़ दिखा। अब बाकी लोगों पर भी लालच हावी हो गया था। वे सोना इकट्ठा करने चल पड़े। रानी ने भी ललचाई दृष्टि से उस ओर देखा, पर राजा के डर से उसके साथ चलने लगी। जब वह पहाड़ी थोड़ी ही दूर रह गई थी, तो हीरे का पहाड़ आया। अब रानी तेजी से उधर दौड़ी और कहने लगी, अब मैं थोड़ा हीरा बटोरने

कुछ लोग चांदी बटोरने वहीं रुक गए और

के बाद ही आपके साथ चलूंगी। एक पल के लिए राजा का मन भी डोल गया था। पर उसने खुद को संभाला और अकेला ही पहाड़ी की ओर चला। वह समय पर वहां पहंच गया। पर काफी इंतजार करने के बाद भी उसे भगवान के दर्शन नहीं हुए। अंधेरा छा जाने पर वह भारी मन से राजमहल की ओर लौटा। रात में ईश्वर फिर उसके सपने में आए और कहने लगे, राजन, आपकी आध्यात्मिक सोच से मैं प्रभावित हूं। पर लोभ-मोह से छुटकारा पाए बिना मेरे दर्शन संभव नहीं। राजा को अपनी कमजोरी समझ में आ गई। -संकलित

हरियाली और रास्ता

किशन, मांगेराम और मिस्त्री

एक मिस्त्री की कहानी, जिसने दो लोगों के बिगड़े रिश्ते सुधारने के लिए उनके खेतों के बीच पुल बना दिया।



किशन और मांगेराम जिगरी दोस्त थे। दोनों किसान थे और उनके खेत अगल-बगल थे। दोनों एक दूसरे की मदद से अच्छी-खासी पैदावार करते थे। गांव वालों से उनकी दोस्ती देखी नहीं जाती थी। वे हमेशा उनमें फूट डालने की कोशिश करते थे। उनकी कोशिश सफल हुई और दो दोस्तों के बीच फूट पड़ गई। अब दोनों के काम अटकने लगे। साझेदारी से काम करने के कारण दोनों अपनी चीजें एक दूसरे से बांट लेते थे। लेकिन अब उन्हें दिक्कत आने लगी। एक दिन मांगेराम ने अपने खेत में पानी लाने के लिए एक नाली खोदनी चाही। पर उसके पास नाली खोदने के लिए औजार नहीं थे। नाली तो बनी नहीं, उल्टे दोनों के खेतों के बीच एक गड़ढा बन गया, जिससे मांगेराम की फसल खराब होने लगी। वहीं किशन के खेतों में पानी की कमी होने लगी। एक दिन एक मिस्त्री घूमता हुआ किशन के पास आया और काम मांगने लगा। किशन बोला, वह जो गङ्ढा सामने देख रहे हो, वह मेरे पड़ोसी की वजह से हुआ है। पहले हम दोनों दोस्त थे, पर अब प्रतिद्वंद्वी हैं। उसने मेरे खेतों को खराब करने के लिए सारा पानी अपने खेतों में भर लिया है और चाहता है कि मेरी फसल सूख जाए। तुम दोनों खेतों के बीच एक दीवार बना दो। तब तक मैं शहर से आता हूं। शाम को खेत पर लौटते ही किशन की आंखें फटी की फटी रह गईं। मिस्त्री ने दीवार के बजाय दोनों खेतों के बीच लकड़ी का पुल बना दिया, जिससे गड़ढे में फंसा पानी दोनों के खेतों में बराबर-बराबर बंट गया। किशन उस बढ़ई को डांटता, इससे पहले ही मांगेराम दौड़ते हुए आकर उसके गले लग गया और माफी -मांगते हुए बोला, यही हमारे रिश्ते की निशानी है। अगर छोटा भाई गलत रास्ते पर भी चला जाए, तो बड़ा भाई उसे वापस सही रास्ते पर ले आता है।

रिश्ते तोड़ देना बहुत आसान है, लेकिन उन्हें बनाए रखना मुश्किल है।